कथा सरिता

चार कीमती रत्न...

एक वृद्ध संत ने अपनी अंतिम घड़ी नज़दीक देख अपने बच्चों को अपने पास बुलाया और कहा: मैं तुम बच्चों को चार कीमती रत्न दे रहा हूँ, मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम इन्हें सम्भाल कर रखोगे और पूरी ज़िन्दगी इनकी सहायता से अपना जीवन आनंदमय तथा श्रेष्ठ बनाओगे।

पहला रत्न है: 'माफी'

तुम्हारे लिए कोई कुछ भी कहे, तुम उसकी बात को कभी अपने मन में न बिठाना, और ना ही उसके लिए कभी प्रतिकार की भावना मन में रखना, बल्कि उसे माफ कर देना।

दूसरा रत्न है: 'भूल जाना'

अपने द्वारा दूसरों के प्रति किये गए उपकार को भूल जाना, कभी भी उस किये गए उपकार का प्रतिलाभ मिलने की उम्मीद मन में न रखना।

तीसरा रत्न है: 'विश्वास'

हमेशा अपनी मेहनत और उस परमपिता परमात्मा पर अटूट विश्वास रखना क्योंकि हम कुछ नहीं कर सकते जब तक उस सृष्टि नियंता के विधान में नहीं लिखा होगा।

परमपिता परमात्मा पर रखा गया विश्वास ही तुम्हें जीवन के हर संकट से बचा पाएगा और सफल करेगा।

चौथा रत्न है: 'वैराग्य'

हमेशा यह याद रखना कि जब हमारा जन्म हुआ है तो निश्चित ही हमें एक दिन मरना ही है। इसलिए किसी के लिए अपने मन में लोभ-मोह न रखना।

मेरे बच्चों जब तक तुम ये चार रत्न अपने पास सम्भालकर रखोगे, तुम खुश और प्रसन्न रहोगे।

ऐसा 'माँ' ही कर सकती है!

एक सौदागर राजा के महल में दो गायों को लेकर आया - `दोनों ही स्वस्थ, सुंदर व दिखने में लगभग एक जैसी थीं।' सौदागर ने राजा से कहा - `महाराज - ये गायें माँ-बेटी हैं परंतु मुझे यह नहीं पता कि माँ कौन है व बेटी कौन - क्योंकि दोनों में खास अंतर नहीं है।'

मैंने अनेक जगह पर लोगों से यह पूछा किंतु कोई भी इन दोनों में माँ-बेटी की पहचान नहीं कर पाया।

बाद में मुझे किसी ने यह कहा कि आपका बुजुर्ग मंत्री बेहद कुशाग्र बुद्धि का है और यहाँ पर अवश्य मेरे प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा इसलिए मैं यहाँ पर चला आया - `कृपया मेरी समस्या का समाधान किया जाए।'

यह सुनकर सभी दरबारी मंत्री की ओर देखने लगे। मंत्री अपने स्थान से उठकर गायों की तरफ गया। उसने दोनों का बारी-बारी से निरीक्षण किया किंतु वह भी नहीं पहचान पाया कि वास्तव में कौन माँ है और कौन बेटी...!

अब मंत्री बड़ी दुविधा में फंस गया, उसने सौदागर से एक दिन की मोहलत मांगी। घर आने पर वह बेहद परेशान रहा। उसकी पत्नी इस बात को समझ गई।

उसने जब मंत्री से परेशानी का कारण पूछा तो उसने सौदागर की बात बता दी।

यह सुनकर पत्नी मुस्कराते हुए बोली `अरे! बस इतनी सी बात है- यह तो मैं बता सकती हूँ।'

अगले दिन मंत्री अपनी पत्नी को वहाँ ले गया जहां गायें बंधी थीं। मंत्री की पत्नी ने दोनों गायों के आगे अच्छा भोजन रखा- कुछ ही देर बाद उसने माँ व बेटी में अंतर बता दिया - लोग चकित रह गए।

मंत्री की पत्नी बोली- `पहली गाय जल्दी-जल्दी खाने के बाद दूसरी गाय के भोजन में मुंह मारने लगी और दूसरी वाली ने पहली वाली के लिए अपना भोजन छोड़ दिया, ऐसा केवल एक माँ ही कर सकती है - यानि दूसरी वाली माँ है। माँ ही बच्चे के लिए भूखी रह सकती है - माँ में ही त्याग, करुणा, वात्सल्य, ममत्व के गुण विद्यमान होते हैं।

जीवन... न चला जाये

एक गिलहरी रोज़ अपने काम पर समय से आती थी और काम पूर्ण मेहनत तथा ईमानदारी से करती थी। गिलहरी ज़रूरत से ज़्यादा काम करके भी खुश थी क्योंकि उसके मालिक...जंगल के राजा शेर ने उसे दस बोरी अखरोट देने का वायदा कर रखा था।

गिलहरी काम करते करते थक जाती थी, तो सोचती थी कि थोड़ा आराम कर लूँ... वैसे ही उसे याद आता था - कि शेर उसे दस बोरी अखरोट देगा -गिलहरी फिर काम पर लग जाती।

गिलहरी जब दूसरे गिलहरियों को खेलते-कूदते देखती थी तो उसकी भी इच्छा होती थी कि मैं भी एन्जॉय करूँ। पर उसे अखरोट याद आ जाता था, और वो फिर काम पर लग जाती।

शेर कभी-कभी उसे दूसरे शेर के पास भी काम करने के लिए भेज देता था, ऐसा नहीं कि शेर उसे अखरोट नहीं देना चाहता था, शेर बहुत ईमानदार था।

ऐसे ही समय बीतता रहा...

एक दिन ऐसा भी आया जब जंगल के राजा शेर ने गिलहरी को दस बोरी अखरोट देकर आज़ाद कर दिया।

गिलहरी अखरोट के पास बैठकर सोचने लगी कि : अब अखरोट हमारे किस काम के ?

पूरी ज़िन्दगी काम करते-करते दाँत तो घिस गये, इसे खाऊँ कैसे!

कीव-यूक्रेन। नौकोवा दुमका पब्लिशिंग हाऊस के कॉन्फ्रेन्स हॉल में पब्लिक प्रोग्राम के दौरान 'म्युचुअल अंडरस्टैंडिंग ऐज़ लिविंग वैल्यु' विषय पर सम्बोधित करते हुए डॉ. विजय कुमार।

गोला गोकर्ण नाथ। सांसद अजय मिश्रा टेनी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुनीता। साथ हैं ब्र.कु. रामपाल व अन्य।

घाटमपुर-उ.प्र.। महन्त कुडरिया बाबा जी को परमात्म संदेश देने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनुराधा। साथ हैं ब्र.कु. कपूर भाई।

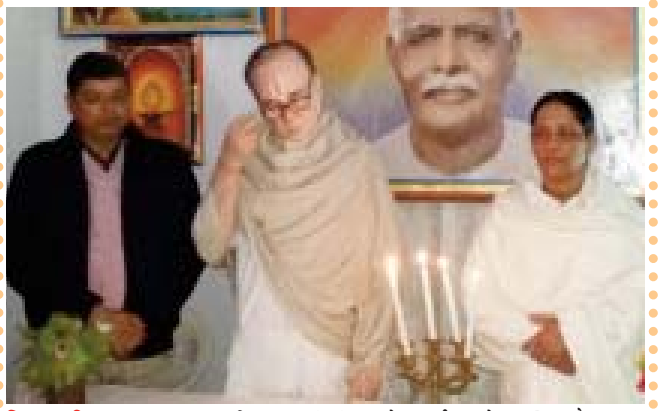

पिपरपाती-गया। ब्रह्माबाबा की पुण्य स्मृति दिवस के कार्यक्रम में उपस्थित हैं इरकॉन के मैनेजर एस.पी. जैसवाल, गया के मुख्य ब्वासाई मुन्ना डालमिया व ब्र.कु. सुनीता।

दरभंगा-बिहार। सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित 'श्रीमद्भगवद् गीता का आध्यात्मिक रहस्य' एवं 'राजयोग मेडिटेशन शिविर' विषयक त्रिदिवसीय कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए जिला जज विद्यासागर पाण्डेय। मंचासीन हैं प्रो. अनिल कुमार झा, प्रिन्सीपल संघ के अध्यक्ष प्रिन्सीपल देव चन्द्र चौधरी, ब्र.कु. आरती, ब्र.कु. कंचन व ब्र.कु. सुधाकर।

राँची। पूर्व केन्द्र संचालिका ब्र.कु. वीणा के स्मृति दिवस पर दीप प्रज्वलित करते हुए प्रीति सिन्हा,निदेशक,राग रंग एकेडमी, श्याम बजाज, समाजसेवी संतोष सिन्हा व ब्र.कु. निर्मला।